एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

शुष्क क्षेत्र में अनार की खेती

(डॉ. प्रियंका कटारा[1] एवं *डॉ. डी. सी. मीणा[2])
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (हॉर्टिकल्चर), कृषि विज्ञान केंद्र, फलोदी (जोधपुर-I)-342301
[2]सहायक प्रोफेसर, सुरेश ज्ञान विहार युनिवर्सिटी, जयपुर-302017
*संवादी लेखक का ईमेल पता: dcmeena1989@gmail.com

अनार एक औषधीय महत्व वाला स्वास्थयवर्धक फल है भारत इसकी खेती का प्रमुख केन्द्र है व राजस्थान में ईसकी खेती जयपुर, सीकर, पाली, श्रीगगांनगर, हनुमानगढ, जोधपुर, बाडमेर, झालावाड, टोंक व झुंझुनु में की जाती है । अनार का पौधा रेगिस्तान में आसानी से पनपने व फल देने के कारण किसानो के लिए वरदान साबित हो रहा है । अनार एक बहुत ही उपयोगी फल है जिसमें कार्बोहाईड्रेड, फाईबर, प्रोटीन व विटामिन की मात्रा सबसे अधिक पायी जाती है अनार का सेवन मानव शरीर के लिये काफी लाभदायक होता है यह मानव शरीर में अधिक तेजी से रक्त की मात्रा को बढाता है इसके ताजा फलों का इस्तेमाल करने से कब्ज की लम्बी बीमारी को दूर कर सकते है इसके बीज व छिलके का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाईयों को बनाने में किया जाता है ।

वैज्ञानिक का नाम – *पुनिका ग्रेनेटम*

कुल–पुनिकेसी

उत्पति का स्थान–अफगानिस्तान

जलवायु :– अनार एक उपोष्ण जलवायु का पौधा है । इसकी अच्छी बढवार व उपज के लिऐ गर्मि या अधिक गर्म व शुष्क तथा सर्दिया अधिक ठण्डी होनी चाहिए वैंसे यह शुष्क क्षैत्रों का आर्दश फल है । अधिक मीठे फलों के लिए पकने के समय जलवायु शुष्क एंव तामक्रम उच्च होना चाहिए ।

भुमिः– अनार लगभग सभी प्रकार की भुमि में उगाया जा सकता है । परन्तू अच्छी पैदावार के लिए जल निकासयूक्त गहरी भारी दोमट भुमि उपयुक्त रहती है अनार के पौधों में लवण व क्षारीयता सहन करने की अदभुत क्षमता रहती हैं। अनार की खेती ऐसी भुमि में की जा सकती हैं जिसका पी.सच मान 6.5 से 7.5 पी.एच मान व ई.सी. 9 ई.सी./मिमी. हो ।

उन्नत किस्मे :–

कम संख्या	किस्मे	कम संख्या	किस्मे
1	जालोर सीडलेस	6	मृदूला
2	सिन्दुरी	7	फूले अरक्ता

3	भगवा	8	बेदान
4	गणेश	9	ज्योति
5	जोधपुर रेड	10	रूबी

प्रवर्धन :–

1. **बीज द्वारा** – बीज द्वारा तैयार पौधों आसमान गुणों वाले होते है बरसात के प्रारम्भ में नर्सरी में बीज बोये जाते है । तथा लगभग एक माह बाद पोधों को पॉलिथिन के थैलियों में स्थानान्तरित कर दिया जाता है ।
2. **कलम द्वारा** – वर्षा ऋतु में अनार की 20– 22 सेमीं लम्बी काष्ट कलमों को 1000 पी.पी.एम आई. बी.ए से उपचारित करने से नर्सरी में लगाने से अच्छी सफलता मिलती है । जडो के विकसित होने से स्थानान्तरित करें इसकी कंटिग फरवरी–मार्च में लगाई जा सकती है
3. **गुटटी द्वारा** – अनार के पोधों में गुटटी लगाने का उचित समय मानसुन ही है इस क्रिया में इचछित किस्म के पौधों में एक वर्ष पुरानी परिपक्व टहनी के सिरें से 30–40 सेमीं 2 से 2.5 सेमी छाल हटाकर 10000 पी.पी.एम आई.बी.ए को लेनोलिन में लेप बनाकर लगना चाहिऐ फिर मॉस घास को गीला करके लपेट कर पॉलिथिन से बांध देते है 2–3 माह में जडें विकसित होने पर इसे मुल पौधों से काटकर अलग कर रोपण के काम में लेना चाहिए ।

पौधों लगाने की विधि :– अनार का बगीचा लगाने के लिऐ रेखांकन व गडडा खोदने का कार्य मई माह में ही सम्पन्न कर लेना चाहिऐ इसके लिऐ वर्गाकार या आयताकार विधि से 5×5 या 6×4 मीटर की दूरी पर 60×60×60 सेमी आकार के गडडे खोदकर 15 से 20 किलो गोबर की सडी हुई खाद 50 ग्राम मिथाईल पेराथियान कीटनाशक चुर्ण मिलावट उनको अच्छी तरह भरकर कुछ दिनों के लिऐ छोड देते है । जंहा कम जल धारण क्षमता वाली बलुई मिटटी हो वहां गडडें के भरते समय चिकनी मिटटी भी मिलाना चाहिऐ । पौधो रोपण हेतू जुलाई – अगस्त का समय अच्छा रहता है । परन्तू जहां पर्याप्त सिचाई जल उपलब्ध हो वहा फरवरी – मार्च में भी पौधा लगाये जा सकते है ।

खाद एंव उर्वरक :– अनार के पौधों में उनकी उम्र के अनुसार नियमानुसार खाद एंव उर्वरक देना चाहिए ।

मात्रा कि. ग्रा. प्रति पौधा

पोधे की आयु	गोबर की खाद	यूरिया	सुपर फास्फेट	प्युरेट आफ पोटाश
1 वर्ष	8–10	0.10	0.25	0.50
2वर्ष	16–20	0.20	0.50	0.100
3वर्ष	24–30	0.30	0.75	0.150
4वर्ष	32–40	0.40	1.00	0.200
5वर्ष	40–50	0.50	1.25	0.250

अनार के पोधों में फुल आने के 5–6 सप्ताह पूर्व गोबर की खाद सुपर फास्फेट व प्युरेट आफॅ पोटाश की पूरी मात्रा व यूरिया की आधी मात्र देनी चाहिऐ ।

अन्तराशस्य :–शुरु के तीन वर्षो में कुष्माण्ड कुल की सबजियों के अतिरिक्त सभी प्रकार की सबजियों जैंसे मटर ,ग्वार ,चंवला, व गैदा की फसल की जा सकती है ।

कटाई–छटाई :– पौधों को बढवार कर प्रारमभिक अवस्था में अचित आकार प्रदान करने के लिऐ कांट छांट आवश्यक है । प्रारम्भ पौधों के चार तने रखें इनमें 3–4 साल तक फल आते रहते है 6 वर्ष बाद इन चारों तनों के स्थान पर नये तने विकसित करें पेडों की कटाई छटाई नई बढवार आरम्भ होने से पूर्व करनी चाहिऐ । फलन के बाद सुखी एंव रोग ग्रस्त शाखाओं को काटते रहना चाहिए ।

पुष्पन एंव फलन :– अनार में वर्ष में तीन बार फल आते है जिन्हे निम्नलिखित नामों से जाना जाता है

क्रम.	नाम	पुष्पन	फलन
01	अम्बे बहार	फरवरी –मार्च	जुलाई –अगस्त
02	मृग बहार	जुलाई – अगस्त	नवम्बर – दिसम्बर
03	अम्बे बहार	फरवरी –मार्च	जुलाई –अगस्त

व्यावसायिक रुप से उच्च गुणवता वाली फसल लेने के लिऐ वर्ष में एक बहार के फल लेना उचित रहता है पानी की उपलब्धता क्षैत्र की जलवायु व बाजार की मांग के आधार पर बहार का चुनाव करना चाहिऐ मृग बहार के फल दिसम्बर में पकते है ओर इसके बाद सिचाई की आवश्यकता नही रहती है पोधें मार्च तक अपने पत्ते गिराकर सुसुप्तावस्था मे रहते है वर्ष आरम्भ होने पर इनमें नई बढोतरी आरम्भ होती है व फूल आते है राजस्थान में कम पानी वाले क्षैत्रों में यह बहार उपयुक्त रहती है इसके लिऐ मार्च –अप्रेल में सिचाई रोककर अनार के बगीचे की जुताई कर देनी चाहिऐ । तथा मई के महीन में थांवले बना कर खाद व उर्वरक देकर सिंचाई करना चाहिऐ। अम्बे बहार के फल ग्रीष्म ऋतु में आते है

उपज एंव भण्डारण :– अनार के फलो की तुडाई पूर्ण परिपक्व अवस्था में ही की जाती है फल पर उगली मारने पर हल्की आवाज हों व दबाने पर दाने टुटने की ध्वनि प्रगति हों तो समझना चाहिऐ की फल पकने की स्थिति में आ गये है अनार में पुष्पन से फल में 4–5 माह लग जाते है पुर्ण विकसित अनार के पौधें से 60– 80 फल प्राप्त किये जा सकते है । अनार के फलों को 4.5°ब तापमान एंव 80–85 : सापेक्षिक आर्द्रता पर सात माह तक सुरक्षित रखा जा सकता है ।

रोग :–

1. **पत्ती धब्बा रोग** – वर्षा शुरु होते ही सकोस्पिोरा तथा ग्लिओस्पारियम नामक कवण के प्रकोप से पतियों एंव फलो पर भुरे व सफेद धब्बे बन जाते है जिससे फलों के बाजार भाव में गिरावट आ जाती है ।

   नियन्त्रण –कार्बेन्डाजिम (1.0 मिली 1 ली.) या मेन्कोजेब (2.5 ग्राम 1 ली.) का 15–20 दिन के अन्तराल पर दो छिडकाव धब्बे पडते ही करना चाहिऐ ।
2. **फल सडन रोग** – फल काले पडकर सड जाते है ।

   नियन्त्रण – फुल आने के समय तथा उसके 20 दिन बाद उपर्युक्त दवा का छिडकाव करना चाहिए

प्रमुख कीट प्रबंधन :–

1. **छाल भदाक कीट** –यह कीट पेड की छाल को खाता है तथा छिपने हेतू डाली के अन्दर सुरंग बना लेता है जिससे पौधे की शाखा कमजोर हो जाती है ।

   नियन्त्रण – डाईमिथोएंट 30 ई.सी. 01 मि.ली.01 लीटर पानी में घोल बनाकर सुरगं में डाले ।
2. **अनार की तितली** –यह अनार का प्रमुख हानिकारक कीट है यह फुलो तथा फलो पर अण्डे देता है । इन अण्डो से लटे निकलकर फलों में प्रवेश कर जाती है तथा फलों के गुदे को खाली कर देती है व फल सडकर गिर जाते है इसके द्वारा 20–80 प्रतिशत हानि हो जाती है ।

नियन्त्रण –फूल व फल बनते समय कोर्बोरिल 04 ग्राम 01 लीटर या मोनोक्रोटोफांस 36 एस.एल. 01 मि. ली. .1 लीटर के हिसाब से छिडकाव करें ।

3. **दीमक व उदई** – शुष्क क्षैत्र में अनार की पौध स्थापना में दीमक का प्रकोप एक गम्भीर समस्या है जडों एवं तनो में अत्यधिक प्रकोप होता हैं । जिससे पौधा सुख जाता है ।

नियन्त्रण –

1. पूर्ण रुप से सडा हुआ गोबर ही पौधे में डालना चाहिए 20 ग्राम कोर्बेनिक चूर्ण गडडे भरने से पहले अवश्य डालना चाहिए ।
2. खडी फसल में क्लोरपाइरीफॉस 02 एम.एल. 01 लीटर घोल कर प्रयोग करना चाहिए ।